जेम्स और एक जायंट पीच 3.11.2014

नाटक

जेम्स हेनरी ट्रॉटर के माता–पिता को एक गैंडे ने मार डाला है। इसलिए वो अब अपनी दो लालची आंटियों के साथ रहता है। तपते दिन में कुछ अजीब–सा घटता है और एक विशाल आड़ू का पेड़ उनके बाग़ में उग आता है। जल्दी ही जेम्स और महाकाय पीच जेम्स की चुड़ैल आंटियों से दूर एक शानदार और अद्‌भुत जगह के लिए रवाना हो जाते हैं।

सकल देशेर सेरा

नाटक के बारे में

21वीं सदी का भारत! माता–पिताओं का सपना ये है कि उनके बच्चे उच्चतम् अंक प्राप्त कर परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाएंगे। ऐसे समय में कक्षा सात में पढ़ने वाली एक छात्रा की इतिहास की परीक्षा काफ़ी नज़दीक है। वो ऐतिहासिक वर्षों घटनाओं और तारीखों को याद करने में व्यस्त है। भारत की समृद्ध धन–संपदा से ललचा कर यूनानियों, सिमाचिनों, हूणों, पठानों और मुग़लों ने बार–बार भारत पर हमला किया और यहॉ की बहुत–सी मूल्यवान संपदा अपने देशों में ले गए। वर्ष 1757 में ब्रिटिशों ने पलासी में नवाब सिराजुददौला को हराया। इस तरह ब्रिटिशों ने नए–नए तरीकों से भारतीयों को दबाना, उन पर मुक़दमें लादना, और उन्हें लूट–खसोटना शुरू कर दिया। भारतीयों ने अंग्रेजों के खिलाफ़ विद्रोह की घोषणा कर दी। इस स्वतन्त्रता आंदोलन में कितनी ही जिंदगियॉ बलिदान हो गईं। अततः वर्ष 1997 में 15 अगस्त को भारत आज़ाद हुआ। भारतीय इसको पढ़ते ज़रूर हैं, पर उससे प्रेरित नहीं होतें, लेकिन हमारे नाटक की छात्रा अपने अध्ययनों से प्रेरित है। उसे लगता है कि भारत माँ कुछ चाहती है, जिसे देने के योग्य वो नहीं हो सकती। क्योंकि इसे समझने के लिए वो बहुत छोटी है। उसकी माँ उसे समझाती है कि अभी वे छोटे हैं पर वे देश का भविष्य हैं। उन्हें श्रेष्ठ स्तर पर शिक्षित ईमानदार, देशभक्त, साहसी और कर्मठ होना चाहिए तभी हमारा देश, हमारी मातृभूमि फिर से सफलता के सबसे ऊँचे शिखर तक पहुँच सकेगा और दुनिया का सबसे अच्छा देश होगा।

जी आया साहब **4.11.2014**

नाटक

नाटक 10 वर्ष के एक बच्चे क़ासिम की कथा कहता है, जो कि एक इंस्पेक्टर के घर काम करता है और काम के बोझ के कारण, आराम करने के लिए भी समय नहीं निकाल पाता। एक दिन चाकू से उसकी उँगली कट जाती है और उस घाव के कारण उसे दो दिन का आराम मिलता है। अब जब कभी भी काम का बोझ ज़्यादा बढ़ जाता है, तो छुट्टी पाने के लिए अपनी उंगली काटने को वो किसी धारदार चीज़ की तलाश में रहने लगता है। लेकिन लम्बी छुट्टी पाने के लिए, एक दिन वो अपनी उंगली ज़्यादा गहरे तक काट लेता है। लेकिन वो अपने हाथ का काम भी खो बैठता है।

रत्नपक्षी **4.11.2014**

नाटक के बारे में

एक गांव में एक पोता दादी के साथ बैठा बार–बार पैसा नहीं है, पर बुद्धि है, पर पैसा नहीं है कहे चला जा रहा है। गांव वाले इकठठा होते हैं और यह फैसला करते हैं कि क्योंकि उसके पास बुद्धि है लेकिन पैसा नहीं इसलिए उसे पैसा कमा कर लाने के लिए भेज दिया जाए वो शहर पहुंचता है। बुद्धिमान आदमी थिप्पा व्यापारी सेठ जी को बंदर की कहानी सुनाकर अपनी बुद्धिमत्ता दिखाता है और उसके मन में अपने लिए विश्वास पैदा कर लेता है। चिड़ियों की बीट को देखते हुए थिप्पा जोकि सेठ जी के साथ समुद्र पर पहुंचा है, सेठ जी से पैसा खर्च करवाना शुरू कर देता है। वो गाय चराने वाले लड़कों में पैसा बांटता है और गाय का गोबर इक्ठ्ठा करता है। हज़ारों चिडियांए गोबर के ढेर में अंडे देती हैं और अपने नवजात शिशुओं के साथ उड़ जाती हैं। थिप्पा उपलों के ढेर को चिडियों की बीट के साथ मिला बहुत सारे उपलों को जलाता है और

बोरों में उनकी राख भरकर उन्हें बिक्री के लिए रख देता है। थिप्पा व्यापारियों से कहता कि वो पानी की बाल्टी में इस राख को रखें और घोल दें। इससे उन्हें वेशकीमती रत्न और हीरों की प्राप्ति होती है। सेठ जी को एक के बदले सौ का फायदा होता है। वो खुशी–खुशी थिप्पा को उसका हिस्सा देते हैं और चले जाते हैं। थिप्पा धन के साथ गांव लौटता है, वो अपनी दादी को पैसा देता है जोकि भेडों की देखभाल करती है। दादी पैसा लेने से मना कर देती ओर उससे कहती है कि पैसा ही सब कुछ नहीं है और उसे कठिन परिश्रम की सलाह देती है। थिप्पा कडी मेहनत के लिए तैयार हो जाता है।

रेक्के कट्टुवीरा...? **4.11.2014**

नाटक के बारे में

जैसे–जैसे संगीत तेज होता है उसके साथ ही अभिनेता मंच पर आ जाते है। दीप रखते है और खुद का परिचय जापानियों के रूप में देते हैं। दो अभिनेता अपनी भूमिकाओं की प्रस्तुति शुरू करते हैं। एक माँ कुनलू है और दूसरी है उसकी बेटी सूकी। सुबह के समय माँ घर के कामों में बेहद व्यस्त है और मदद के लिए सूकी को आवाज़ देती है। दोनों को ही शहर के बाहर अपने काम के लिए जल्दी ही यहाँ से निकलना है। एक बेसब्र बच्ची, बेटी, पंखों वाली एक तितली होने का सपना संजोए है और बड़ी चालाकी से हर उस काम को नज़र अंदाज़ कर देती है, जो उसकी माँ उससे करवाना चाहती है। पता चलता है कि उसके भाई ने खूब पैसा बनाने की नीयत से सेना में भर्ती ले ली है। माँ की इच्छा है कि काम पर जाते हुए रास्ते में ही सूकी अपने भाई को एक पार्सल भेज दे। हवाई हमले की चेतावनी माहौल में तनाव भर देती है। पर छोटी सूकी को युद्ध की परवाह नहीं है। माँ बेटे को लेकर चिंतित हे। शहर में एक बम्ब गिरता है। किनलू अपनी बेटी को खोजने बाहर निकलती है। जिस समय सूकी उसे मिलती है वो पूरी तरह जल चुकी है। किनलू उसे बचा नहीं पाती। बेटा जो कि विस्फ़ोट के दो महीने बाद लौटा है। छोटी बहन की मौत की ख़बर सुनकर परेशान है। किनलू का कहना है कि युद्ध प्रेमी सिर्फ़ आम जनों को ही मारते है और ज़्यादा से ज़्यादा तमगे जीतते है। 30 वर्षों के बाद एक उद्धारगृह में जीवित बची किनलू को युद्ध के फल के रूप में एक विकृत बच्चा मिलता है जो सिर्फ घिसट कर चल सकता है और तितली पकड़ने का सपना देख सकता है। पर किनलू ये जान जाती है कि इस हिंसक संसार में बच्चे का पंख पाने का सपना कभी पूरा नहीं होगा....

ये नाटक गुहार है एक शांतिपूर्ण जीवन की, जहाँ बच्चों के सपनों को उनके पंख मिलते हैं, जहाँ वे वयस्कों के पापी कर्मो द्वारा नष्ट नहीं होते।

कलाकार की खोज **5.11.2014**

नाटक के बारे में

''कला में ही इंसान को इंसान बनाये रखने की सर्वाधिक क्षमता है'' व्यक्तिगत तौर पर मेरा मानन है। मैंने इस पंक्ति को प्रयोग कर देखने का प्रयास किया तो नतीजा आश्चर्यजनक और सुखद है। नाटक ''कलाकार की खोज'' बच्चों में या यूं कहें हर इंसान में कला की संभावना तलाशती है। दर्शकों में यह चेतना जगाने का यत्न करता है कि भ्रम और धारणाओं का चश्मा हटाकर रखना चाहिए क्योंकि इससे वस्तुस्थिति या सच्चाई नहीं देखी जा सकती। कलाकार की खोज कलाकारों की पैरवी करती है क्योंकि आज भी आप किसी से कहेंगे कि आप कलाकार हैं तो लोग कहते हैं पर आप करते क्या हैं? कला कार्य को आज भी सामाजिक मान्यता सही रूप से नहीं मिल पाई है। इस नाटक के माध्यम से कलाकारों की पीडा समाज के सामने रखी गई। नाटक की सफलता हमें इस रूप में मिल गई है कि नाटक में जुडे बच्चे जो नशे और चोरी जैसे कार्यों में लिप्त थे। वे परिवर्तन के राह पर निकल पडे हैं। इन्हें समाज के लोग पुनः सम्मान की दृष्टि से देखने लगें हैं।

मंथरिका कन्नाडी **5.11.2014**

नाटक के बारे में

नाटक मंथरिका कन्नाडि एक जनश्रुति है। जादुई दर्पण जो कि नाटक में सबसे महत्वपूर्ण थीम है, खुद को तोलने का एक निर्णायक औज़ार है और हमारे भीतरी और बाहरी स्व के बीच संवाद के एक कारक के रूप में कार्य करता है। बाल रंगमंच

बच्चों का खेल नहीं है और इस बात को पूरी तरह से हम तब समझ पाते हैं जब हम कहानी के कथानक के ज़रिए दिए जाने वाले संदेश को आत्मसात करते हैं। 'इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता कि एक दर्पण कितना सुन्दर है। ये कभी भी हमारे अंतः करण की झलक नहीं दिखाएगा' ये उक्ति है कवि कुजुनिमाश की। ये सिर्फ़ जादुई दर्पण– है जो अपने भीतरी स्व से संपर्क करने और संवाद बनाना सीखने में हमारी मदद कर सकता है। अगर लोग इस बात को लेकर अधिक चिंतित होते कि अपने बाहरी की बजाए, भीतरी दुनिया में वे कैसे दिखाई देते हैं तो ये दुनिया कहीं बेहतर जगह होती। सच्ची शिक्षा तभी है जब हम उच्च मूल्यों की खोज करें। जबकि हमारा बाहरी स्व स्वार्थ और छल–द्वेष की ओर प्रवृत्त है। लोक संगीत और गीतों और कथा वाचन के जरिए नाटक दिली तौर पर हमें हमारे कहीं गहरे स्तरों से जोड़ता है और एक अमिट छाप छोड़ते हुए हमें याद दिलाता है कि जब तक कोई स्वयं को नहीं जान पाता। शक्ति, ज्ञान और पूँजी हर किसी को विकृत ही करेगे।

महाभोज **6.11.2014**

नाटक के बारे में

महाभोज की कथा कुछ इस तरह चलती है। दो दोस्त उदय और अक्षय हमेशा से एक –दूसरे के साथ भिड़े रहे हैं और एक दूसरे की टॉग खिंचाई के बेहतरीन मौक़े भी तलाश में हैं। उदय ज़्यादातर मौक़ों पर अक्षय को धता बता देता है। अब अक्षय उदय के घर आया है क्योंकि उदय ने उसे एक भोज पर आमंत्रित किया है। लेकिन अक्षय को आभास हो जाता है कि सब कुछ उतना ख़ुशनुमा नहीं है जिसका कि वादा किया गया था और सबसे अच्छी समझदारी शायद फ़ौरन वहाँ से भाग जाने में ही है।

नमस्कार जी नमस्कार **6.11.2014**

कथासार

संयुक्त राष्ट्र अधिवेशन के घोषणा–पत्र में बच्चों की विभिन्न समस्याओं के निदान हेतु बाल अधिकार बनाये तो गये पर बच्चों को इसे समझाना मुश्किल कार्य था। बाल अधिकार के सैद्धांतिक पक्ष को सरल एवं सहज रूप से जनमानस तक पहुंचाने के लिए ही इस नाटक के निर्माण का प्रयास किया गया है। इस नाटक के माध्यम से बच्चे खेल–खेल में अपने अधिकारों को स्वयं तो जान समझ ही सकेंगे। साथ ही जनमानस में अपनी आवाज भी बुलंद कर पायेंगे।

थत्तामारम (द पैरट ट्री) **6.11.2014**

नाटक

नाटक केरल की धरती के मिथकों, लोकोक्तियों, लोकरस, परम्पराओं, लैजेण्ड्स' संस्कृतियों और जड़ और चेतन के ज़रिए आज के संमय के और साथ ही अतीत के भी अनुभवों को संबद्ध करता है। ये मानव जीवन की पेड़ों, पक्षियों और दूसरे जीवित और अजीवित (अदृश्य) तत्वों के साथ लयात्मक निरंतरता को पुर्नस्थापित करता है। नाटक एक लोक कथा से विकसित होता है जो कि एक तोता–वृक्ष के बारे में है जो कई अर्थो में रहस्यमय है। ये एक पेड़ के पुरातन मिथक का सार प्रतीक बनता है जो बहुत घने जंगलों के बीच में बढ़ता है और इसका फल हर रोग की दवा के तौर पर इस्तेमाल होता है। ये पेड़ सिर्फ पक्षियों प्रज्ञा में ही दर्श्य है। एक बार वहाँ का राजा एक रहस्यमची बीमारी और निशाचरण की जकड़ में आ जाता है। जब वो गहरी नीद में होता है तो विद्वेषी, वुरी और दुरात्माएं और भयावह जीव जो युगों से धरती के नीचे दफ़्न थे, फिर से पैदा और पुनर्जीवित हो जाते हैं। वे हर आम–ख़ास के सपनों में रेंग मचाते हैं और जीवन की प्रक्रिया के संतुलन को बिगाड़ देते हैं। राजकुमारी समेत हर किसी की नीदें उड़ जाती हैं। शैतानी आत्माएं रात–दिन राजकुमारी के इर्द–गिर्द मंडराती रहती हैं। पल भर को भी वो अपनी पलक नहीं झपका पाती। तभी अचानक जंगल से उड़कर आए एक छोटे–से तोते का गीत राजकुमारी को राहत देता है। दुरात्माएं तोते के गीत का सामना नहीं कर पातीं और वहाँ से उड़ भागती हैं। कुछ दिनों बाद समझदार, पिता – तोता जंगल में जाकर उस रहस्यमयी फल को ले आता है जो किसी भी बीमारी को दूर कर सकता है। इस कार्य में वो अपना जीवन बलिदान कर देता है। छोटे तोते को ये फल राजा को भेंट देना है जिससे कि वो मानसिक आघात जिसकी जकड़ में राजा और पूरा देश है, उससे निजात हासिल की जा सके.... क्या घटा उसकी इस यात्रा में....?

गोस्था सिंपल पिलाची **7.11.2014**

नाटक के बारे में

नाटक कुरूप बत्तखी की कालातीत कथा का प्रयोग– कल्पना और समानांतर वृत्तांत के रूप में पहली बार ग्रिप्स पुणे की प्रस्तुति 'गोष्ठा सिम्पले पिल्लाची' में हुआ। नाटक एक छोटी लड़की सांवनी के बारे में चर्चा करता है जो कि उस, किसी 'विशेष योग्यता' से रहित, एक साधारण लड़की है, जिसे आज की प्रतिस्पर्धात्मक शहरी दुनिया में अपरिहार्य माना जाता है। इसीलिए उसे उसके गहरे रंग और ऐनक़धारी रूप प्रभाव; और कुछ हासिल कर पाने में औसत क्षमता के कारण अपने चचेरे भाई–बहनों और अपने दोस्तों द्वारा ताने दिए जाते हैं। नाटक उसकी खुद को समझने की एक यात्रा है कि अंतर्सौंदर्य ही अंतिम सत्य है और रूप–रंग, सफलता, ये केवल ऊपरी सतही आमुख हैं। हर बत्तख का बच्चा जिस पर कुरूप का ठप्पा लगेगा, अंततः हंस–रूप में उसका रूप परिवर्तन हो जाएगा। बस एक बार वो ये एहसास कर ले कि उसकी गुहार क्या है और नया आत्मविश्वास उसे उसके अपने आकाश में ऊँची उड़ान भरने की ऊर्चा–शक्ति देगा।

भरारी **8.11.2014**

नाटक के बारे में

नाटक कथा है मानव के जीवन की जिसने करोड़ों वर्ष पूर्व ग्रहों के उभरने, धरती पर जीवन, पेड़–पौधे, पशु–पक्षियों और क्रमिक रूप से मानव नस्ल के उद्भव के साथ रूप लेना शुरू किया। नाटक में जीवन के लिए मनुष्य के संघर्ष जैसे विषयों को पिरोया गया है। यह पाषाण युग, औज़ार और हथियार, आग के प्रयोग, खेती, पहिए की खोज, बिजली, संचार और कलाओं, मनोरंजन के साधनों, जीवनशैली को बदलती महत्वपूर्ण खोजों, नई–नई संभावनाओं से युक्त प्रौद्योगिकी, रोबो की खोज और अंततः दूसरे ग्रहों तक मनुष्य की उड़ान को भी दर्शता है।

क्या हुआ हाल, जब चल नैनीताल **8.11.2014**

नाटक के बारे में

एक जानी–मानी ट्रेवल एजेंसी के काफ़ी मुसाफ़िर उसकी नियमित बस सेवा से नैनीताल जाने का इंतज़ार कर रहे हैं। निर्धारित दिन भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमि से आए मुसाफ़िरों से बस भर जाती है। उनमें से कोई भी पर्यटक के रूप में नैनीताल नहीं जा रहा बल्कि अपने–अपने उनके व्यक्तिगत काम हैं। बस सही समय पर रवाना होती है। पर नैनीताल के रास्ते में सभी कुछ ठीक नहीं हैं। मुसाफ़िरों को रास्ते में भू–स्खलन से दो–चार होना पड़ता है और इसीलिए ये एक विलंबित यात्रा! उस तूफ़ानी मौसम में दो मददगार महिलाओं के साथ ही एक झोंपड़ी मिल जाने पर वे खुद को भाग्यशाली समझते हैं। लेकिन मेज़बानों के बारे में उनकी धारणाएं उस समय गलत साबित होती हैं जब उन्हें इस बात का इल्म होता है कि वे लुट गए हैं। उसके बाद वे चोरों को ढूँढते हैं। काफ़ी हो–हल्ले के बाद उन्हें उन्हीं की बस में उनका क़ीमती सामान और चोर भी मिल जाते हैं। नाटक की कथा में ये सभी मोड़ हैं और ये इसे मनोरंजक और उत्तेजक बनाते है।

द बॉय हू स्टॉप्ड स्माइलिंग **9.11.2014**

नाटक

छोटा मल्हार शतंरज का एक मोहरा है। लेकिन उसने मुस्कुराना भी बंद कर दिया है। उसकी बहन मल्लिका और उसका दोस्त अश्विनी उसे चिड़िया घर को दे देना चाहते हैं। मम्मी सारे देवताओं से प्रार्थना करती हैं और मल्हार पर दबाव बनाती हैं कि वो तैराकी की कक्षाओं में जाया करे जबकि पापा जो कि उसे अर्थ प्रबंधन करियर के लिए तय्यार करना चाहते हैं, डॉ. भुसकुटे को बुलवा लेते हैं, जिसे कि शत्रु पक्ष के बॉस के रूप भी जाना जाता है। क्या डॉ. भुसकुटे मल्हार को खा डालेगा। क्या मल्हार शतरंज की एक बाज़ी में महान विश्वनाथन आनंद को हराने का अपना सपना पूरा करेगा ? और क्या वो लड़का जिसने मुस्कुराना बन्द कर दिया है, दोबारा अपनी मुस्कुराहट हासिल कर पाएगा ? एक कसी हुई कहानी गीतों, नृत्य और बहुत से हास–परिहास के माध्यम से कहीं गई।

अपुनबना पन्गालनी **9.11.2014**

नाटक के बारे में

जंगल के सभी पशु–पक्षि बाघ से बेहद डरे हुऐ थे। कुछ समय बाद एक मुर्गा और मुर्गी (भी) जंगल में आए और एक नए बने घोंसले में बस गए। उनके चूज़ों ने जन्म लिया। उन्होंने अपने नए मिले चूज़े को आशीर्वाद देने के लिए सभी पशु–पक्षियों को दावत दी। पर बाघ के अतिरिक्त उनमें से कोई भी इस अवसर पर उपस्थित नहीं हुआ। खूबसूरज चूज़ा देखते ही बाघ के मुँह में पानी आ गया। बाघ ने मुर्ग़ा–मुर्ग़ी से कहा कि वे अपने बच्चों को सम्पूर्ण जीव बनने की शिक्षा लेने को उसके पास भेज दें। इसके बाद मुर्ग़ा–मुर्गी ने अपने बच्चों को उसके पास भेज दिया। जब कभी भी मुर्गा–मुर्ग़ी अपने बच्चों के पास जाते, ये उनकी समझ में आने लगा कि उनके बच्चे बाघ द्वारा खा लिए गए हैं। जब वे अपने बच्चों का अता–पता पूछते तो बाघ जवाब देता कि उन्हें सीखने की जगह पर भेज दिया गया है। आख़िर में बाघ ने जब सारे चूज़े ख़त्म कर दिए, बाघ ने मुर्ग़ा–मुर्ग़ी को भी खाने की योजना बना ली। मुर्ग़ा और मुर्ग़ी ने बाघ से लोहा लेने की योजना बनाई। बाघ से भयभीय थे। जंगल के जीव बनस्पतियों ने बाघ के ख़िलाफ लड़ाई में उन दोनों का साथ देने का निर्णय लिया। एक रात जब बाघ मुर्ग़ा और मुर्ग़ी को खा डालने की नीयत से आया तो घोंसले में पूरी तरह अंधेरा था। दोनों ने बाघ से प्रार्थना की कि अग्नि कुण्ड में से आग लेकर वो बत्ती जला दे। जैसे ही बाघ ने अग्निकुण्ड में से आग लेने की कोशिश की अचानक एक अण्डा फटा। बिल्कुल उसी पल तिंगखांग प्रकट हुआ और उसके सींगों ने बाघ के शरीर को छितरा दिया। अचानक ऊपर छत से एक विशाल कद्दू नीचे की और लुढ़का और उसकी कमर पर बुरी तरह गिरा। इस तरह अब उसकी कमर टूट गई थी, उसे बुरी तरह से पीटने लगे। बाघ की समझ में अब आ चुका था कि दूसरे जीवों के साथ उनसे बुरा किया है। अब वे एक हो गए थे और उन्होंने उन शत्रुओं के विरूद्ध लड़ने का निर्णय ले लिया था जो उन्हें आपस में बॉटने की कोशिश करते हैं। बाघ ने भविष्य में कभी बुरे काम न करने का फ़ैसला लिया और उनसे अनुरोध किया कि उसे उन सभी के बीच ही रहने की अनुमति दें। एकाएक उनकी समझ में आ गया कि एकता में शक्ति है।

भो–काटा **9.11.2014**

नाटक

बोह काट्टा, नन्हें पोल्टू की कहानी है। गर्मी के दिनों में वो चिथड़े लपेटे और जाड़ों में अपने अकेले स्वेटर को डाले गाँव में पुरानी पतंगों की दुकान का गर्वीला मालिक पोल्टू एक ऐसा नाम है जिससे हम सभी परिचित हैं। दुनिया के अन्य कितने ही पोल्टूओं–सा ग़रीब, हमारी कहानी का नायक एक हिम्मती लड़का है। अपनी दुनिया का बादशाह है वो। एक उम्दा पतंगबाज़ जो गाँव में नौकरानी का काम करने वाली अपनी माँ का एक बेहतर भविष्य गढ़ने का सपना संजोए है। उसकी काबिलियत का साथ उसके हमेशा उससे वफ़ादार साथी अनाथ नन्तू ने ही दिया है, जो पोल्टू को एक अपने नायक के रूप में देखता है। नाटक के अंत में अमीर और प्रभावशाली लाहा परिवार को दी गई पोल्टू और नन्तू की चुनौती बस साहस की एक चैष्टा ही नहीं हैं, बल्कि अपने दमनकारियों के विरूद्ध पूरे समाज की मुक्ति संघर्ष के लिए एक आवाज़ है।

खेल–ना **11.11.2014**

नाटक के बारे में

खेल–ना में चार खिलौने हैं – एक रेलगाड़ी, एक तोता, एक बार्बी गुड़िया और एक कुत्ता अकेले बचे थे। खिलौनों की एक ऐसी दुकान में जो 10 वर्षों के लम्बे समय से बंद पड़ी है। वे उकता गए हैं और ऐसे बच्चों की कामना करते हैं जो उनके साथ खेल सकें और उनके अस्तित्व की सार्थकता को पुनर्स्थापित कर सकें। तो, इस तरह, वे बच्चों की; और उस दुकानदार की खोज में दुकान से बाहर निकलने का फ़ैसला करते हैं, जो उन्हें बेहद प्यार करता था पर पिछले 10 सालों से मुड़कर भी नहीं आया। और इस तरह शुरू होती है एक यात्रा। वे अनेक बच्चों से मिलते हैं उनमें कुछ निष्कपट और मेहनती हैं तो कुछ शरारती और तिकड़मी। लेकिन खिलौने किन बच्चों की चाहत करेंगे कि वे उनसे खेलें ? आइए मिलकर देखें.....

गीत गाये मिलन माला **12.11.2014**

नाटक के बारे में

बहुत दिनों की बात है एक गांव में एक बूढ़ा बुढिया रहते थे। उनके घर के सामने एक कुआं था। गांव की औरतें पनघट से आते–जाते गाना गाया करती थीं। एक दिन बुढ़िया ने उनसे पूछा, गाना कहां मिलता है। औरतों ने मज़ाक में कहा बज़ार में। वहीं से हमारे पति खरीद लाते हैं। उसने अपने पति से कहा, जाओ एक गाना खरीद कर लाओ। बूढ़ा बेचारा बज़ार जा पहुंचा, पर उसे गाना नहीं मिला। एक दुकान पर एक बेवकूफ लड़का बैठा था, बूढ़े ने उससे कहा एक गाना दे दो। तभी उस लड़के ने देखा एक चूहा जमीन में बिल बना रहा है। इसे कुडक–कुडक आवाज आ रही थी। लड़के ने उसी पर ही गाना बना दिया। थोडी देर बाद उसने एक सांप को रेंगते, खरगोश को उछलते और हिरन को भागते देखा, इन सब को देख कर उसने एक नया गाना बना डाला। बूढिया बहुत खुश हो गया, वह उस गाने को गुनगुनाने लगी। उस रात उनके घर में कुछ चोर घुस आये। बुढ़िया अपना गाना गुनगुनाती जा रही थी, जो उस गाने में था वही चोर कर रहे थे। वो डर कर भाग गये। अगले दिन वही चोर कुंए पर मौजूद थे। अपने चोरी के सामान को लेकर भागने की फिराक में। उन्होंने फिर वही गाना सुना और लगा कि गांव वालों को उनके बारे में पता लग गया है। उन्होंने डर के मारे गांव वालों को सामान लौटा दिया। गांव बाले बुहत खुश थे।

आमियो सुपरमैन **13.11.2014**

नाटक के बारे में

नाटक सुपरमैन से भी मज़बूत एक संगीत मयी हास्य नाटक हे जो नामक बीमारी से ग्रस्त के साथ एक छोटे बच्चे की कहानी कहता है। नाटक रॉय किफ़्ट द्वारा लिखा गया और बाद में वोल्कर लुडविग ने इसका अनुवाद किया और पहली बार 1982 में बर्लिन में इसका प्रदर्शन किया गया। 'आमियों सुपरमैन' ऊपर उल्लेखित मूल नाटक से जयति बोस द्वारा बंगला में अनुवादित किया गया। नाटक एक 12 वर्षीय लड़के व्रिजू के बारे में है जो कि स्पाइना बिफ़िडा नाम की बीमारी लिए पैदा हुआ था और वो व्हील चेयर का मुहताज है। वो अपनी 10 वर्षीय बहन पाऊला और माँ के साथ रहता है। नाटक में हास्य–विनोद बाहरी लोगों के अपाहिज व्यवहार से आता है जो अंधे हैं और कई मौक़ों पर गूँगे–अलौकिक बाधा के पीछे के व्यक्तियों से चिपके पड़े। विकलॉगों के प्रति लोगों की सहानुभूति की प्रवृत्ति होती है पर ये नाटक एक विकलॉग के व्यवहार के बारे में है और एक अनुरोध है दैनिक जीवन से उन्हें पूरी तरह जोड़ने का। अपंग, शरीरिक रूप से, मानसिक भयाक्रांत, विकलॉग, बहुत से शब्द–नाम हैं जो हम उन लोंगो को परिभाषित करने के लिए प्रयोग करते हैं जो इतने सामान्य नहीं होते। अपनी माँ, बहन और दूसरे लड़के पलाश, जो बाद में व्रिजू का दोस्त बन जाता है, की मदद से जीवन के प्रति उसकी आँखो और व्यवहार के ज़रिए ये व्रिजू जैसे लोगों के प्रति बाहरी लोगों के भिन्न–भिन्न निषेधों और असंवेदनशलीताओं की चर्चा करता है।

हम एक है **14.11.2014**

नाटक के बारे में

नाटक हम एक हैं, पर हमें खेलना का रूपांतर है। इसकी कहानी बच्चों और उनके अधिकारों के गिर्द घूमती है। नाटक एक स्कूल में खुलता है जहां सभी धर्मों के बच्चे पढ़ते हैं। इसका कथानक जानदार है। यह दिखाता है बच्चे बड़ों से हटकर सोच सकते हैं। तनाव में वे ही उन्हें रास्ता दिखाते हैं इस तरह बड़े बच्चों से सीखते हैं। नाटक हमें दिखाता है कि बच्चों का सीधा और बंटा हुआ दिमाग कैसे बड़ों को सामाजिक बुराइयों से निपटने में मदद करता है। इन बुराइयों को समाज ने ही पैदा किया है। बड़े लोग अभी तक पुरानी नफरत को भूल नहीं पाए हैं। यह नाटक अलग–अलग धर्मों में एकता ला सकता है और बच्चों के हकों की रक्षा कैसे की जाए यह सिखा सकता है। नाटक की पृष्ठभूमि शहर के दंगों की है। बड़े घबरा जाते हैं लेकिन बच्चे अपने अधिकारों की मांग करते हैं और बडों को सिखाते हैं कि हालात से कैसे निपटा जाए। लड़कर नहीं बल्कि बातचीत करके। यह नाटक आज के हालात का है।